चरखा विकास संवाद
CHARKHA DEVELOPMENT COMMUNICATION NETWORK

अंक 2, द्विमासिक, अक्तूबर 2004

संपादक की मेज से

इस महीने हमने गांधी जयंती मनाई है इसलिए *चरखा विकास संवाद* का यह अंक मोहनदास कर्मचंद गांधी को समर्पित है। यानी उस शख्स के लिए जो आस्थाओं की एक समूची व्यवस्था का प्रतीक है। इस विशेष अंक के माध्यम से हम ग्रामीण निर्धन जनों और गुमनाम लोगों के प्रति अपनी संकल्पबद्धता को एक बार फिर से ताजा करने का प्रयास और उम्मीद कर रहे हैं।

गांधीजी एक महान संप्रेषक थे। *इंडियन ऑपिनियन, यंग इंडिया, नवजीवन, हरिजन* और *सत्याग्रह* के नाम से प्रकाशित लोकप्रिय साप्ताहिकों के संपादक के रुप में उन्होंने अपनी इस आस्था को चरितार्थ किया था। उनके लिए समाचार पत्र एक ऐसा माध्यम था जिसके जरिए वे स्थानीय भारतीय समाज को शिक्षित करने की महत्वाकांक्षा रखते थे। इस तरह उनके सामाजिक-राजनीतिक लक्ष्य की प्राप्ति में पत्रकारिता केवल एक उपकरण मात्र नहीं रह गई थी। वह उनके लिए एक बहुत बड़ा हथियार था।

गांधी जी ने पत्रकारिता को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया और हमने भी हाशिए के लोगों की आवाज पहले लोगों तक पहुंचाने के लिए यही रास्ता चुना है। हालांकि इस रास्ते पर चलने में हमें कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है फिर भी इस दिशा में हमें अभी बहुत लंबी यात्रा करनी है। आने वाले दिनों में हम विकास संवाद के क्षेत्र में और नए रास्ते खोलने की कोशिश करेंगे।

हमें उम्मीद है कि पहले कि तरह यह अंक भी आपको पसंद आएगा।

शुभकामनाओं के साथ
इंद्राणी डे

चरखा-संजय घोष फेलोशिफ अवार्ड 2004-2005

चरखा ने कश्मीर घाटी, जम्मू और लद्दाख में लोकतांत्रिक मूल्यों की हिफाजत करने और शांति प्रयासों के लिए दुस्साहसी पत्रकारिता करने वाले युवा पत्रकारों और लेखकों को 'चरखा संजय घोष फेलोशिप फॉर पीस एंड डेवलपमेंट' देने की घोषणा की है। पचास हजार रूपए राशि की यह फेलोशिप दिल्ली में एक समारोह में सात दिसंबर को दिया जाएगा।

फेलोशिप के लिए आवेदन करने वाले पत्रकारों की आयु सीमा 25-40 तय की गई है। आवेदनकर्ता मूल रूप से जम्मू कश्मीर राज्य चाहिए। वे अपना आवेदन अंग्रेजी या उर्दू में भेज सकते हैं। चयन समिति में सामाजिक कार्यकर्ता और लेखिका सुशोभा भर्वे, वरिष्ठ पत्रकार उषा राय, लेडी श्री राम कॉलेज (नई दिल्ली) की प्रिंसिपल डॉ मीनाक्षी गोपीनाथ, इंडियन एक्सप्रेस श्रीनगर के ब्यूरो चीफ मुजम्मिल जलील, कश्मीर टाइम्स के वरिष्ठ पत्रकार मोहम्मद सैयद मलिक, द ट्रिब्यून के एडिटर इन चीफ एच के दुआ और बीबीसी के पूर्व संवाददाता मार्क टूली है।

आवेदन इस पते पर भेजे।

आशिमा कॉल (संजय घोष फेलोशिप फॉर पीस एंड डेवलपमेंट 2004-2005)
चरखा डेवलपमेंट कम्यूनिकेशन नेटवर्क
जी ब्लॉक, 15/11-12 ग्राउंड फ्लोर
मालवीय नगर, नई दिल्ली 110017
फोन- (011) 26680816, 26680688
Email-fellowship@charkha.org

आवेदन जमा करने की अंतिम तारीख 12 नवंबर है।

अधिक जानकारी के लिए चरखा कार्यालाय में सुजाता राघवन को संपर्क किया जाता है।

चरखा कार्यालय फोन-(011) 26680688, 26680618

कार्यशालाएं

रांची में पांच दिवसीय कार्यशाला

सामुदायिक रेडियो के कार्यकर्ताओं के क्षमता विकास के लिए रांची, झारखंड के अनगड़ा ब्लॉक में मंथन युवा संस्थान के सहयोग से 21 से 25 अगस्त 2004 तक एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के लिए विश्व बैंक ने वित्तिय सहायता दी। आकाशवाणी रांची के केंद्र निदेशक, प्रिया नई दिल्ली के कार्यक्रम निदेशक चंदन दत्ता, चरखा के एसोसिएट एडिटर इरशाद अहमद और मंथन युवा संस्थान के सुधीर पाल ने इस कार्यशाला में हिस्सा लिया।

कार्यशाला का मकसद बेदिया समुदाय के लोगों में क्षमता विकास करना था ताकि वे अपने सामुदायिक रेडियो के लिए कार्यक्रम बना कर क्षेत्रिय मुद्दों को उठा सके। इसके लिए उन्हें तकनीकी जानकारी मुहैया कराई गई। कार्यशाला के अंत में प्रतिभागियों ने अपने-अपने गांवों में जाकर विभिन्न मुद्दों पर कई कार्यक्रम बनाए जो आकाशवाणी रांची पर प्रसारित किया जाएगा।

छतरपुर में दो दिवसीय संवाद

लोगों को सशक्त करने और उन्हें सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए मीडिया का इस्तेमाल कैसे हो इसके लिए मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में दो दिवसीय संवाद का आयोजन हुआ। इसमें बुदेलखंड क्षेत्र में पैक्स से जुड़े कई सामाजिक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया और चरखा की एसोसिएट एडिटर सुजाता राघवन ने इस संवाद का संचालन किया। पैक्स ने डेवलपमेंट अल्टरनेटिव कार्यक्रम के तहत इस संवाद के लिए वित्तिय सहायता दी।

संवाद में यह उभर कर आया कि संस्थाएं जो समुदाय में काम कर रही है वे आपस में सूचनाओं के आदान-प्रदान के साथ अपने मुद्दों को उठाने के लिए मीडिया का इस्तेमाल करेंगें और चरखा इसमें उनकी मदद करेगा। चरखा मीडिया से संबंध बनाने और हर तरह के मीडिया के इस्तेमाल का कौशल सिखाएगा। यह भी तय हुआ कि संस्थाएं बुंदेलखंड में विकास संवाद के लिए अपने-अपने स्तर पर पहल करेगी।

बाड़मेर में एक दिवसीय संवाद।

पश्चिमी राजस्थान में सक्रिय संगठन, संस्थाएं और समान विचार रखने वाले लोगों को विकास संचार के आवश्यकता के प्रति समझ बनाने और मीडिया तक जनमुद्दों को पहुंचाने के लिए 10 अगस्त 2004 को चरखा, नई दिल्ली और बाड़मेर (राजस्थान) की संस्था विकल्प के सहयोग से एक दिवसीय संवाद का आयोजन किया गया। इस संवाद के आयोजन के लिए भारतीय प्रतिष्ठान नई दिल्ली ने वित्तिय सहयोग दिया।

इस एक दिवसिय संवाद में पश्चिमी राजस्थान के विभिन्न जिलों के कई सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। स्रोत व्यक्ति के तौर पर उन्नति अहमदाबाद के कार्यकारी निदेशक विनॉय आचार्य, चरखा गुजरात के संजय दवे, नई दिल्ली चरखा के अमन नम्र और प्रतिभा ज्योति ने भागीदारी की। विकल्प के योगेश वैष्णव ने इस एक दिवसीय संवाद के आयोजन की जिम्मेदारी निभाई।

आपसी विचार-विमर्श के बाद यह निष्कर्ष निकला कि सामाजिक कार्यकताओं और ग्रामीण पत्रकारों में उनके मुद्दों के प्रति समझ और लेखन क्षमता का विकास करने के लिए सितंबर से नवंबर तक जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, पाली, बीकानेर, हनुमानगढ़, नागौर और चुरू में कार्यशालाएं आयोजित की जाएगी और समन्वयक की भूमिका विकल्प संस्था निभाएगी।

चरखा संगठनों की बैठक

चरखा ने सितंबर 2004 में संस्कृति प्रतिष्ठान,नई दिल्ली के रमणीक प्राकृतिक वातावरण में गुजरात, महाराष्ट्र और बंगलौर स्थित चरखा संगठनों की पहली बैठक का आयोजन किया। इस बैठक का उद्देश्य चरखा के उन बुनियादी स्वपनों और लक्ष्यों को एक बार फिर से याद करना था जिनके अंतर्गत इसकी स्थापना की गई थी। साथ ही उन बिंदुओं की तलाश करना भी था जो इन साथी संगठनों को एक मंच पर लाते हैं। यह अपने में एक उल्लेखनीय बात हैं कि इन स्वायत्त साथी संगठनों ने अपने लिए अलग पहचान बनाई है।

- गुजरात में चरखा की ाुरुआत सन् 1995 में विकासपरक प्रयासों और सामाजिक परिवर्तन के प्रति नागरिक समाज में एक आस्था और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए की गई थी। अब इस इसके पास 20 नियमित लेखक हैं और यह अनेक प्रकार की गतिविधियों के द्वारा अपने आधार क्षेत्र को समर्थन-सहयोग देता है। यह विकास गोष्ठियां और

मुद्दा-आधारित प्रतियोगिताएं आयोजित करता है। अधिक सूचना के लिए कृपया संजय दवे से charkhaguj@icenet.net पर संपर्क करें।

- महाराष्ट्र में चरखा के कार्यक्रम को एक स्वायत्त संस्था, *परिवर्तन* कार्यान्वित करती है। वह मीडिया के द्वारा पैरवी कर्म में संलग्न है। इसने चरखा के ''पैदल'' पत्रकारों की एक नई और अलग अवधारणा प्रस्तुत की है। ये पत्रकार गरीबों और स्थानीय मीडिया के बीच संपर्क सेतु का काम करते हैं। चरखा, महाराष्ट्र के पास नीति संबंधी जानकारियों का एक विशाल भंडार है और साथ ही राज्य विधान सभा के सत्रों के समय मीडिया के जरिए अपने दृष्टिकोण को प्रसारित करने के कौशल भी। अधिक जानकारी के लिए कृपया बलिराम बलसराफ से mitra@bom3.vsnl.net.in पर संपर्क करें।
- बंगलौर में चरखा के कार्यक्रम को इसका साथी संगठन *कम्यूनिकेशन फॉर डेवलपमेंट एण्ड लर्निंग* कार्यान्वित करने में जुटा है। यह एक मीडिया केन्द्रित कार्यक्रम है जो सीमांत जनों के हितों के लिए मीडिया का उपयोग करता है। यह कार्यक्रम कर्नाटक में कन्नड़ और अंग्रेजी में एक फीचर सेवा चलाता है और मीडिया हेतु ृाोध, मुद्दों के विश्लेषण और उनके प्रकाशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह जल पत्रकारिता की अपनी अनूठी अवधारणा को और आगे विकसित करने में रुचि रखता है। अधिक सूचना के लिए कृपया ृाांगोन दासगुप्ता से cdlblr@bgl.vsnl.net.in पर संपर्क करें ।

चरखा विकास संवाद का शुभारंभ

चरखा बोर्ड की सदस्या श्रीमती किरण अग्रवाल ने हमारे पहले न्यूजलेटर का 19 अगस्त 2004 को शुभारंभ किया। चरखा अध्यक्ष शंकर घोष ने उनका स्वागत किया। न्यूजलेटर के शुभारंभ पर बोर्ड के सदस्य मैथ्यू चेरियन और चरखा के सभी सदस्य मौजूद थे।

श्रीमती किरण अग्रवाल और मैथ्यू चेरियन ने न्यूजलेटर के संदर्भ में अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए और चरखा के इस प्रयास को सराहनीय बताया। उनके सुझावों पर अमल करते हुए हमने यह दूसरा अंक निकाला है। हमें आशा है कि हम आपकी उम्मीदों पर खरे उतरने में कामयाब होंगे।

हमारी मदद कैसे करें?

- कार्यशालाओं में हिस्सा लेकर और विकास और हाशिए के मुद्दों पर लेख लिखकर।
- चरखा को लेखों का संपादन अनुवाद करके और मीडिया में जगह दिलाकर।
- आर्थिक सहायता देकर

नए प्रकाशन

सोनू का सपना- आगे बढ़ना

यह पुस्तिका चरखा ने हंगर प्रोजेक्ट की मदद से प्रकाशित की है। इसका मूल उद्देश्य पंचायती राज में महिलाओं की भूमिका के बारे में युवा बालिकाओं को समझाना है ताकि भविष्य के लिए बेहतर नेतृत्व तैयार किया जा सके।

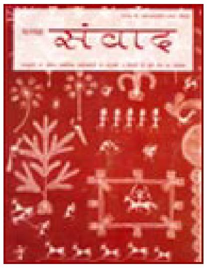

चरखा संवाद'

चरखा ने जनमुद्दों पर सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ताओं के अनुभवों व विचारों के खुले मंच के रूप में इस संवाद पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया है। इसमें चरखा की कार्यशालाओं के प्रतिभागियों को अपने-अपने क्षेत्रों के मुद्दे उठाने का पूरा अवसर दिया जा रहा है, साथ ही चरखा की गतिविधियों की जानकारी भी समाहित है।

फिल्में

'रैंडम वाइसेस इन काश्मीर'

इस फिल्म में कश्मीर के उन आम लोगों की कहानी है जो घाटी में घट रही गोलीबारी, बम विस्फोटों, हत्याओं के दौर में भी मानवता, ॒ांति और प्यार की बातें करते हैं। हालांकि इन्हें कोई सुनता नहीं है फिर भी अगर मौका दिया जाए तो ये घाटी में एक बार फिर भाइचारे, ॒ांति और मानवता को लौटा लाने की उम्मीद जताती है।

इस फिल्म का निर्देशन डॉ. परवेज इमाम ने किया है, जबकि इसके निर्माण के लिए वित्तीय सहयोग दिया है भारतीय प्रतिष्ठान ने। फिल्म का प्रदर्शन संजय घोष ॒ांति व विकास फेलोशिप के अवसर पर प्रदर्शित किया गया था।

'स्पिनिंग एक्शन इनटू वर्डस'

इस फिल्म का निर्देशन आनिन्दियो राय ने किया है। 15 मिनट की इस फिल्म में चरखा की लेखन व कॉमिक्स कार्यशालाओं का फिल्मांकन किया गया है। इससे दर्शकों को चरखा की कार्यशालाओं के स्वरूप व प्रकृति की जानकारी मिलती है।

समाजिक बदलाव के लिए कॉमिक्स

चरखा सामाजिक कार्यकर्ताओं, पंचायतकर्मियो और महिलाओं को कॉमिक्स और कार्टून बनाने का भी प्रशिक्षण देता है ताकि वे प्रभावशाली और आसान तरीके से मीडिया तक अपनी बात पहुंचा सके। कॉमिक/कार्टून के जरिए चरखा के प्रतिभागी सामाजिक बदलाव में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

एक दशक का पड़ाव

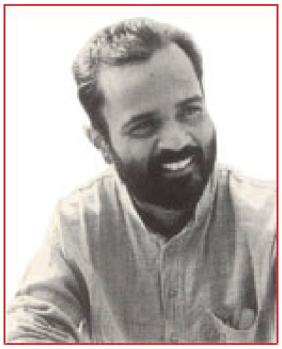

यह हमारे लिए निश्चित ही आत्मसंतुष्टि और गौरव की बात है कि तमाम आर्थिक, भौतिक बाधाओं, दिक्कतों के बावजूद हम इस साल चरखा की स्थापना का एक दशक पूरा कर रहे हैं। ठीक 10 साल पहले जब चरखा अस्तित्व में आया था, तब उसके सामने तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक हालात के मद्देनजर मीडिया में मुद्दों के लिए स्थान दिलाने की चुनौती थी। आज वह चुनौती और भी बड़ी हो गई है, क्योंकि बीते 10 सालों में मीडिया में तकनीकी रूप से तरक्की होने के बावजूद मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता घटी है। जबकि इस दशक में जनमुद्दे और भी गंभीर और व्यापक होकर प्रभावशाली रूप में सामने आए हैं।

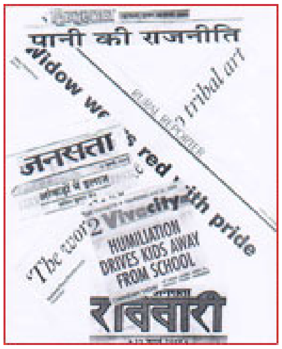

बीते दशक में हमने चरखा की आंतरिक आर्थिक दिक्कतों के बावजूद अपनी प्रतिबद्धता और गतिशीलता में कोई कमी नहीं आने दी। उल्टे हम परेशानियों को झेलकर मजबूत होते गए। हमारी गतिविधियों की संख्या और दायरा बढ़ता ही गया। चरखा के संस्थापक संजय घोष के अपहरण के बाद के 18 महीनों की निष्क्रियता का दौर छोड़ दें तो निश्चित तौर पर चरखा लगातार प्रगति के मार्ग पर ही अग्रसर रहा है। अकटूबर 1998, यानी चरखा के दोबारा सक्रिय होने के बाद के छह सालों में चरखा ने मीडिया के बदलावों को काफी नजदीकी और गंभीरता से देखा है, इस दौर में वह मुद्दों के साथ भी लगातार जुड़ा रहा है। यही वजह है कि तेजी से बढ़ते विज्ञापनों तथा घटती संवेदनशीलता के बावजूद वह मीडिया में मुद्दों की उपस्थिति दर्ज करा पाने में सफल रहा है। पिछले छह सालों में हिंदी के अखबारों में प्रकाशित 600 से भी ज्यादा इस बात का सबूत हैं। चरखा की फीचर सेवा जो फिलहाल देश के करीब 80 अखबारों में नियमित तौर पर विकासात्मक मुद्दों पर आलेख भेजती है, के लेखकों में राज्यों के जनमुद्दों पर सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ताओं के अलावा नामी-गिरामी लोग भी शामिल रहे हैं। इनमें अरूंधति राय, संदीप पांडेय, राजेंद्र सिंह, ज्यां द्रेज, शबाना आजमी तथा जावेद अख्तर सरीखे लोगों के नाम लिए जा सकते हैं।

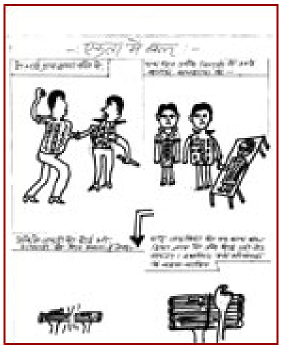

अगर हम चरखा को गतिविधियों के आईने में देखें तो पाते हैं कि 1994 से उत्तर-पूर्व के सातों राज्यों, राजस्थान, झारखंड व मध्यप्रदेश में मीडिया कार्यशालाएं आयोजित करने का सिलसिला लगातार जारी रहा है। उत्तर-पूर्व के साथ हमने दुबारा अपना रिश्ता कायम किया जब दो साल पहले मिजोरम को अपनी लेखन व कॉमिक्स कार्यशालाओं में प्रभावी तौर पर शामिल किया। हमने मिजोरम के मुद्दों को मुख्यधारा मीडिया में शामिल करने के लिए दिल्ली में मीडिया संवाद का आयोजन किया जिसमें वहां के पत्रकारों के साथ दिल्ली के वरिष्ठ पत्रकारों की सफल बातचीत आयोजित की। इसके अलावा उत्तरांचल भी पिछले साल से हमारी गतिविधियों के दायरे में आ चुका है। इस साल से हम बिहार में भी सक्रिय होने जा रहे हैं।

चरखा की गतिविधियों में एक नया आयाम पिछले साल दिसंबर से जुड़ा, जब हमने संजय घोष शांति व विकास फेलोशिप की शुरुआत की। पहली फेलोशिप कश्मीर के दो युवा पत्रकारों को अंग्रेजी व उर्दू में दी गई ताकि वे कश्मीर में चल रहे विकास व शांति को प्रयासों को कलमबद्ध कर सकें। इसके अलावा चरखा ने सामुदायिक रेडियो की जरूरत को भी शिद्दत से महसूस किया है। झारखंड में मंथन युवा संस्थान के साथ चरखा इसी साल से सामुदायिक रेडियो पर गतिविधियों की शुरूआत कर रहा है।

चरखा ने अपने एक दशक के सफर में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं, लेकिन आज जब हम अपनी दसवीं वर्षगांठ मना रहे हैं, यही समय है जब हम अब तक के अपने सफर पर एक नजर डालें, उससे सीख लें और आगे के सफल सफर के लिए और बेहतर तरीके अपनाएं।

लेख

झुकेगी नहीं मीना

कात्यायनी उप्रेती

'आज आप यहां बैठे हो, हमसे खुली छत में बैठकर बात कर रही हो, पर सच बताऊं तो अगर आप 7-8 महीने पहले यहां आतीं तो यहां एक सेकंड नहीं बैठ सकती थीं। बैठ क्या, यहां आ ही नहीं सकती थीं। आपको कहीं से गन्दी गालियां सुनाई देती तो कहीं से झगड़े की आवाज आती और कहीं से औरतों, बच्चों के चीखने-रोने की। आप सोचिए, रिश्तेदारों तक आना बंद कर दिया था; ...नरक हो गया था हमारा गांव...।' आंखों में आंसू लिए मीना ने अपने पुराने दिनों को याद करते हुए कहा, पर अचानक एक चमक उन आंखों में दिखती है और वे कहती है - ''मुझे नहीं मालूम ये हिम्मत कहां से आयी? .... पता क्या नहीं भगवान ने ही दी। आज इस गांव में कोई शराब नहीं पीता। सबकी शराब हमने बंद करा दी। कोई करे जरा शराब पीकर हुड़दंग, हमारा महिला मंगल दल ठीक कर देगा उसे...'।

मीना उत्तरांचल के पिथौरागढ़ जिले के ग्राम पंचायत छाना के धारी गांव की एक दबंग 30-35 साल की महिला है- दुबली पतली, सामान्य कद, दबा रंग, एक अनूठा आकर्षण लिए चमकती आंखें, साथ ही प्रवाहयुक्त दमदार वक्ता। लेकिन यह आज की मीना है, अब से लगभग आठ महीने पहले यह जोश और उमंग उसमें नही था। शराब उसकी सबसे बड़ी दुश्मन थी। वह याद करती है, 'कांटों में रह रहे थे हम सब। पति पी-खा के आ जाते थे, घर में रोज-रोज झगड़े का आलम था। झगड़े के बाद कुछ दिन मायके में रो-धोकर रही। फिर लौट आई।

यहां हालत यह थी कि छोटी सी जगह और तेरह भट्टियां। कोई शरीफ या भला आदमी यहां से न तो गुजरता था और न आता था। कोई भूले-भटके आ गया तो दुनिया की सारी रद्दी से रद्दी गाली उसको...। घर में खाने को कुछ हो या न हो, पीने को शराब जरूर मिलेगी। ये सारे आदमी औरत की मजदूरी या मजदूरी से लाये भट्ट-मसूर देकर दारू ले आते थे। बच्चे भूखे, हम भी भूखे...।' गांव की औरतों और कुछ आदमियों ने बताया कि गांव के ये हाल 9-10 साल से चल रहे थे। आर्मी से रिटायर्ड ऐरोनोटिकल इंजीनियर पीताम्बर जोशी कहते हैं- 'जब 1996 में मैं घर आया तो यहां 2-3 भट्टियां खुल चुकी थी। पहली भट्टी किसी जोगाराम ने दिल्ली से लौटने के बाद खोली थी, शिकायत की गयी, पुलिस आयी, पकड़ के भी ले गयी, पर तीसरे दिन ही वो छूट गया। खूब गाली-गलौज की उसने- मेरा क्या कर लिया तुम लोगों ने ...। फिर क्या धीरे-धीरे यहां 13-14 भट्टियां खुल गयीं। हालात ये हो गए कि औरत सुबह से शाम तक मेहनत कर मजदूरी लाती और सारी की सारी दारू में चली जाती।' गांव के लोग बताते हैं कि इस शराब से तंग आकर 9-10 साल

पहले एक महिला मंगल दल बना। हल्की सी कोशिश हुई, पर मंगल दल से कोई परिचित न हो पाया और वह ठप्प हो गया। मीना और गांव की अन्य औरतें कहती हैं- 'इस मंगल दल के बारे में हमें कोई खबर ही न थी। न जाने कब गठित हुआ, किसने गठित किया? हमें तो अपने आंदोलन के दौरान पता चला...।'

खैर, दस साल बाद ही सही, शराब आंदोलन की शुरूआत तो हुई। 'मुझे याद नहीं कौन-सा महीना था वो। हां तारीख तीन थी। उस दिन मैं, सोना देवी, सीता देवी और कलावती देवी, हम चार औरतें डी.एम. कोर्ट गयीं। हमनें आबकारी वालों को रिपोर्ट की और गांव में तुरन्त छापे मारे गये। कनस्तर की कनस्तर शराब निकली, वो लोग कुछ भट्टी वालों को भी ले गये। इधर गांव की और औरतें हमारे पास आयीं और बोलीं- हमें क्यों नहीं बुलाया, फिर क्या था 30-32 औरतों का जमावड़ा हो गया।

लेकिन शराब का छूटना इतना आसान नहीं था। दो दिन बाद पांच तारीख को भट्टी वाले छूट के आ गये। हम फिर से पूरा काफिला लेकर एस.डी.एम., डी.एम. से मिलने गये। वो चकित हो गये और बोले अपना एक महिला मंगल दल बनाओ, साथ ही उन्होंने गांव की स्थिति देखने दो सिपाही भी भेज दिये।' मीना पूरे जोश से बताती है- 'अब हम मैदान में उतर ही गये। एक सीटी बजायी और सारी औरतें कुछ अच्छा कर जाऊंगी...।' मीना हंसती और बताती है- 'उस समय हम सब में इतना जोश था कि सब औरतें मेरे आगे आ गयीं। कहने लगीं- मुझे मार, मेरी गर्दन काट...।' उनकी इस हिम्मत से भट्टी वाला डर कर वापस चला गया। पीताम्बर जोशी जो इस आंदोलन में पूरे सहायक थे, कहते हैं- ''इन औरतों ने गजब किया, रात भर तलाश करती थीं, भट्टी के लिए या शराबी के लिए। कोई लड़खड़ाता दिख जाये, जरा, एक सीटी बजी, सब इकट्ठा हो जाती थीं, शराबी की खबर लेने, बिच्छू पानी (बिच्छू खुजली पैदा करने वाला पौधा होता है जिसे पानी में गीला करने के बाद बदन में छूने से और पीड़ा होती है) के साथ...।'

गांव के महिला मंगल दल की अध्यक्ष निर्मला पाण्डे भी कम दम-खम वाली नहीं थी। शराब की भट्टियों के मामले में वो पुलिस थाने जाकर भी लड़ आयीं। वे आंदोलन के बारे में बताती हैं- 'हमारा आंदोलन इतना तगड़ा था कि खुद हमारे पति ने हमारा पूरा साथ दिया, जबकि वो खुद पीते थे। इनके अलावा मीना के पति ने भी पूरा साथ दिया। वे कहते थे, इस आंदोलन के लिए जो करना है, करो। मीना के मुताबिक, 'हम उन दिनों रात-रात भर अंधेरे में पिथौरागढ़ लगभग 10 किलोमीटर तक चले जाते थे। कभी-कभी गाड़ी में जैसे-तैसे, अक्सर बिना टिकट के, कई बार पैदल ही। इतना जोश था। औरतें छोटे-छोटे बच्चों को भी छोड़कर जाने वालों में शामिल हो जाती थीं। रात-रात भर के दौरे में हम सीआईडी का भी काम करते थे। जिसने शराब पी, पचास रूपया जुर्माना मंगल दल के नाम। कुछ ही दिनों बाद स्थानीय विधायक प्रकाश पंत ने मंगल दल का कागजों में भी गठन करा दिया था। कुछ ही दिनों सारी भट्टियां टूट गयी थीं। अच्छा ही हुआ, हमने सीधे तोड़-फोड़ भी नही की। पहले तो समझाया, समझा तो ठीक, वरना बिच्छू, पानी...।' जाहिर है कि अगले दिन से वो आदमी पहले की तरह तो पी नहीं सकता। उसे भी तो अपनी इज्जत प्यारी हुई...।' वो हंसती है।

आज मीना और धारी गांव की तमाम औरतें खुश हैं। भले ही आज उनसे और उसके दल से भट्टी वाले और उनका परिवार बात नहीं करता, वे भी उन्हें दोष नहीं देतीं। 'उनकी रोटी छीनी ठैरी हमने,

नाराज तो होंगे ही। उनकी औरतों ने साथ नहीं दिया। क्योंकि खुद बनाने वाली जो ठेरीं। कुछ पढ़ी-लिखी औरतों ने इसीलिए नहीं दिया, क्योंकि उन्हें बोलने का सेंस (अहसास) हुआ, हम तो जो भी आया, मुंह में फट से बोल दिया।' आज धारी गांव का हर बच्चा स्कूल जाता है। पहले कई बच्चों ने खराब माहौल के कारण स्कूल जाना छोड़ दिया था। आज यहां कोई शराबी नजर नहीं आता। गांव के ही मनोहर और हरिराम कहते हैं- 'अब कौन पियेगा शराब, हम सब आदमी पुलिस से नहीं, इनसे ज्यादा डरते हैं।' वो दोनों और साथ में बैठे सारे आदमी हंसते हैं।

कुछ रुककर हरिराम कहते हैं- 'नहीं-नहीं, बहुत अच्छा काम है ये, हम अब इनके साथ हैं, बस ये कसक बाकी है कि अब कुछ रोजगार हो जाता तो...।' मीना का मंगल दल सिर्फ अपने गांव में शराब बंद करके चुप नहीं रहा, बल्कि उसने और गांवों को भी चिट्ठी लिख कर इसकी प्रेरणा दी है। मीना बताती है- 'अब यहां शराब बंद हो गयी थी। पर कुछ आदमी पास के गांवों से पीकर आ जाते थे। इसलिए हमने उन्हें चिटठ्ी लिखी, फिर उन्होंने भी मंगल दल बनाया और शराब बंद करायी। ये सिलसिला भुरमुनी, दिगताली, मझेडा, कुमाईचौड़ में चला और अब छेड़ के इलाके में चल रहा है। अब औरत ने चैन की सांस ली है।'

मीना का चेहरा और उसकी चमकती आंखें उसकी कामयाबी की खुशी बताते हैं। भले ही उसके दल के पास कोई सुविधा नहीं है, न कोई ऑफिस, न सरकार से मिला कोई पैसा, लेकिन वह अपना आंदोलन जारी रखेगी। अब उसकी नजर गांव के विकास पर है। इसके लिए उसने काफी अर्जियां शहर के अधिकारियों तक पहुंचायी है, लेकिन जवाब नदारद है। पर वो हारने वालों में से नहीं उसे किसी का डर नहीं, 'अब कोई डर नहीं, मैं आगे तक लड़ूंगी, देश के लिए जब हमारे भाई कारगिल में नहीं डरे तो मैं इस गांव के अच्छे के लिए क्यों डरूं?' वह मुस्कुराती है और उसकी आंखों की चमक बतातीी है बेशक वह हारेगी नहींइकठ्ठा। 4-5 लड़के भी हमारे साथ थे। 6 तारीख को हमने शराब के 7 कनस्तर फोड़े...।' विरोध तो होना ही था, गांव का एक भट्टी वाला मीना के पास पहुंचा और गाली देने लगा। उसने बड़ियाट (स्थानीय तेज औजार) मीना के गले पर रख दी। मीना ने पूरी दबंगता से कहा -'काट दे, जाना ही है,

महिलाओं ने दिखाई सफलता की राह

निर्मला पुतुल

जहां चाह वहां राह की कहावत गाजीपुर की उस महिला सभा पर खरी उतरती है जिसे एक लंबे संघर्ष के बाद उल्लेखनीय सफलता हासिल हुई है। गाजीपुर झारखंड के दुमका जिले में जरमुंडी प्रखण्ड के रायकिनारी पंचायत का एक छोटा सा हरिजन-आदिवासी बहुल गांव है। कुछ समय पहले तक इस गांव में शराब बनाने बेचने का धंधा जोरों से चलता था आज यहां घर-घर में दूध का उत्पादन हो रहा है। यह परिवर्तन कोई एक दिन, एक माह या एक वर्ष का नहीं, बल्कि चार-पांच वर्षो के लम्बे संघर्ष और कोशिशों का नतीजा है जिसमें वहां की महिला सभा की अथक परिश्रम, लगन और कुशल संगठनात्मक क्षमता शामिल है।

एक समय था जब गाजीपुर में भूख और गरीबी का आलम था। भरपूर खेती न होने के कारण लोग महाजनों के चंगुल में फंसे हुए थे। उनकी महिलाओं के गहने और खेत महाजनों के पास गिरवी थे। काम के बाद ज्यादातर लोग दारू पीकर पड़े रहते थे। बच्चे भी दिन भर गांव की गलियों में दौड़ते नजर आते तो कुछ गाय-बकरियों के पीछे भागते। आर्थिक संकट के कारण महिलाओं की अनेक घरेलू समस्याएं थीं जिससे उबरने के लिए वे छटपटा रही थीं लेकिन लाख हाथ-पांव मारने के बावजूद कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। तभी सामाजिक परिवर्तन के लिए सक्रिय सामाजिक संस्था 'बदलाव फाउण्डेशन' की पहल पर वहां एक महिला सभा का गठन किया गया।

वहां कार्यरत सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती नमिता कड़ार बताती हैं कि कुछ वर्ष पहले जब पहली बार वह इस गांव में आई, तो महिलाएं घर से बाहर नहीं निकलती थीं। मिलने जाने पर पास बैठना तो दूर, बात भी नहीं करना चाहती थीं। समाज में पुरुषों का दबदबा होने के कारण वे उन्हीं के मनमुताबिक काम करने को मजबूर थीं। अगर कभी-कभार कुछ महिलाओं को समझा-बुझाकर साथ बैठतीं भी तो पुरुष पी-खाकर आते और गाली-गलौज तथा मारपीट करने लगते। नमिता कहती हैं कि लोग उन्हें भी भला-बुरा कहकर अपमानित करते थे। इसके बावजूद वह लगातार कोशिश करती रहीं। धीरे-धीरे पुरुषों की मानसिकता बदली और महिलाओं को रास्ता साफ होने लगा। फिर क्या था, धीरे-धीरे महिलाएं घर से निकलकर संगठित होने लगीं। महिला सभा बनी और स्वयं सहायता समूह के तहत अपनी छोटी-छोटी बचतें इकट्ठा करने लगीं। पैसों का आपसी लेन-देन नियम के अनुसार चलने लगा जिसका उपयोग खाद, बीज, घर-बीमारी, शादी-ब्याह तथा अन्य घरेलू जरूरतों की पूर्ति के लिए छोटे स्तर पर होने लगा। अब लोग जरूरत पड़ने पर महाजन के घर नहीं बल्कि महिला सभा के पास जाने लगे। जब पुरुषों को इससे लाभ होता दिखा तो वे भी अपने-अपने घर की महिलाओं का सहयोग करने लगे। लेकिन जब महाजन की महाजनी पर इसका प्रभाव पड़ने लगा

वे भीतर ही भीतर कुढ़ने लगे और और समूचे बदलाव की सूत्रधार नमिता कड़ार के बारे में दुष्प्रचार करने लगे। लेकिन लोगों को नमिता पर भरोसा था और महाजनों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उल्टे महिला सभा से प्रभावित होकर बहुत सारी महिलाएं उससे जुड़ने लगीं। कुछ दिनों बाद टोला स्तर पर संगठन बनने लगा जिसका अच्छा-खासा प्रभाव उसके आसपास के गांव पर भी पड़ा और वहां की महिलाएं भी संगठित होने के लिए अवसर तलाशने लगीं।

महिला सभा की गतिविधियों का दायरा बढ़ने पर उसे पास के एक बैंक से जोड़ा गया। उसके कार्यो से प्रभावित होकर सन 2001 में 25 हजार और सन 2002 में दो लाख 8 हजार रुपए की राशि स्वर्णजयन्ती स्वरोजगार योजना के तहत प्रदान की गई। इस राशि का उपयोग महिला सभा ने स्थानीय जरूरतों के मुताबिक, महिलाओं और पुरूषों के संतुलित रोजगार को ध्यान में रखते हुए किया। इसके तहत जहां कृषि कार्य के लिए बैल, खाद-बीज, पम्पसेट, स्प्रिंकलर सेट आदि उपयोगी सामानों की पूर्ति की गई, वहीं पशुपालन के लिए मुख्य रूप से गाय और भैंस भी लोगों की मांग के अनुसार दिये गये। इसके अलावा जातिगत पेशे से जुड़े कारीगरों को आर्थिक सहायता दी गई ताकि वे लचर ढंग से चल रहे धंधे को मजबूत कर सकें। कुछ लोगों को बैलगाड़ियां भी खरीद कर दी गई। गाय और भैंस मुख्य रूप से उन्हीं घरों में दिया गया जिनके घरों में शराब बनाने-बेचने का धंधा चलता था। इस मदद के साथ उन्हें सख्त हिदायत दी गई कि अगर किसी भी दिन यहां दारू-ताड़ी-हंड़िया का माहौल दिखा तो उसी दिन उनकी भैंस छीन ली जायेगी और महिला सभा से उसे निष्कासित कर दिया जायेगा। यह भी तय हुआ कि गांव की कोई महिला उससे बात-व्यवहार नहीं करेगी। फिर किसी की क्या मजाल थी जो इसका उल्लंघन कर अपने पांव में कुल्हाड़ी मारती।

कुछ ही महीने बाद क्षेत्र में परिवर्तन साफ तौर पर दिखने लगा। आसपास के खेत जो एक फसल के बाद साल भर खाली पड़े रहते थे, वहां सब्जियों की खेती लहलहाने लगी। रोजाना घर-घर से दूध इकट्ठा होकर आसपास के कस्बों में जाने लगा। किसान सब्जियां बैलगाड़ियों में लादकर हाटों तक पहुंचाने लगे। वैज्ञानिक तरीके से कृषि की ओर लोगों का रूझान बढ़ा जिससे अनाज पैदावार बढ़ा। इसके बाद महिलाओं ने स्वास्थ्य और शिक्षा की ओर कदम बढ़ाया। क्षेत्र में वर्षो से बंद पड़े स्वास्थ्य केन्द्र को खुलवाकर वहां मिलने वाली आधिकारिक सुविधाओं को लड़-झगड़कर हासिल किया। कुछ महिलाओं ने दाई (प्रसव हेतू)का प्रशिक्षण भी लिया। गर्भावस्था के दौरान लगने वाले टीके के प्रति सजग होकर समय-समय पर टीके लेने लगीं। महीनों से बंद पड़े दो हैंडपंप आपस में चन्दा वसूल कर ठीक करवाए। साथ ही साथ अपने-अपने बच्चों को स्कूल तक पहुंचाने लगीं। इसका नतीजा हुआ कि महीनों तक फांकी मारने वाले मास्टर जी भी सतर्क होकर नियमित स्कूल आने लगे।

अब महिलाओं का हस्तक्षेप सरकारी विकास एवं कल्याण कार्यक्रमों में बढ़ा। गांव घर में बनने वाली सड़कों, कुओं, तालाबों आदि में भी वहां की सभी महिलाएं रुचि लेने लगीं। अन्नपूर्णा, अंत्योदय, वृद्धा पेंशन, और मातृत्व लाभ से लेकर बच्चों के पोषाहार तक में उनका हस्तक्षेप बढ़ने लगा। योजनाओं के तहत किसको क्या, कितना और कब मिल रहा है, इन सब पर महिला सभा पूरी निगरानी रखने लगी। कल तक जो महिलाएं किसी से बात करने तक से हिचकिचाती थीं, वे आज बैंक कर्मचारियों से लेकर ब्लॉक तक के पदाधिकारियों से सहजता से बात करती देखी जा सकती हैं। और भी कई पक्ष हैं जिन्हें गाजीपुर की महिलाओं की सार्थक गतिविधियों से जोड़कर देखा जा सकता है। चाहे वह अंधविश्वास का मामला हो या गांव-घर के छोटे-मोटे घरेलू झगड़े-सबका

निपटारा महिला सभा करती है। कभी-कभी तो कुछ मामलों में महिलाओं की संगठन क्षमता के आगे पुरुषों को अपना विचार भी बदलना पड़ता है और अंततः महिला सभा द्वारा लिया गया निर्णय ही मान्य होता है।

जाहिर है कि महिला सशक्तिकरण के लिए होने वाली महानगरीय सेमिनारों, गोष्ठियों से दूर देश के सर्वाधिक गरीब जिले की महिलाओं ने अपने दम पर यह कर दिखाया है कि महिला सशक्तिकरण केवल शहरों की बपौती नहीं है, गांव-खेड़ों में महिलाएं ज्यादा बेहतर ढंग से अपने दम पर अपने विकास की राह खोज सकती हैं और उसपर सफलतापूर्वक चल सकती हैं।

अब अकेले नहीं हम
उषा चौधरी

राजस्थान के बाजड़ गांव की रहने वाली विधवा कंचनदेवी ने परिवारवालों और गांववालों के विरोध के बावजूद अपने बेटे की शादी में लाल चुनड़ी पहनकर सबको चौंका दिया। गांववालों को उसका ऐसा करना बिल्कुल पसंद नहीं आया और सबने उसका बहिष्कार करने का फैंसला किया। लेकिन कंचनदेवी को अपने किए का कोई पछतावा नहीं था। उसका तर्क था कि विधवा होने के बाद भी उसे अपने बेटे की शादी में शामिल होने का पूरा हक है क्योंकि वह उसकी मां है। कंचनदेवी में अपने परिवार और गांववालों का विरोध करने की ताकत अचानक नहीं आ गई। राजस्थान में कुछ सालों से सफलतापूर्वक काम कर रहे एकल नारी शक्ति संगठन ने उसमें गांववालों का विरोध करने और झूठी परंपराओं को तोड़ने की हिम्मत जगाई है, वरना कुछ दिन पहले तक वह विधवा होने को अपनी किस्मत मानकर बेबसी और लाचारी का जीवन जी रही थी।

1999 से अस्तित्व में आए राजस्थान की एकल नारी शक्ति संगठन ने यहां की विधवा और परित्यक्ता महिलाओं को जीने की नई राह दिखा दिखाई है। यहां इस संगठन को मिल रही सफलता ने महिलाओं को अबला कहने और समझने वाले समाज को जबरदस्त चुनौती दी है। इस संगठन से महिलाओं को एक मंच मिला है जिससे वे अपने साथ हो रहे अत्याचार के खिलाफ मुकाबला कर रही है। अकेली रहने वाली, परित्यक्ता और पति की मौत के बाद विधवा होकर अपना जीवन काटने और अपने बच्चों का पालन-पोषण करने वाली 9000 महिलाओं का यह संगठन पूरे देश के लिए एक मिसाल बन गया है।

इस समय यह राजस्थान के 23 जिलों के 55 ब्लॉकों में एकल महिलाओं की कमेटियों के माध्यम से पेंशन, संपत्ति और भूमि पर अधिकार, महिला हिंसा और अत्याचार को रोकने, एकल महिलाओं को समाज में सम्मान दिलाने और उनसे जुड़े संबंधित नीतियों में आवश्यक बवलाव लाने जैसे मुद्दों पर सक्रियता से काम कर रहा है। संगठन की सक्रियता और दिनों-दिन महिलाओं की बढ़ती संख्या ने महिलाओं को जीने का हौसला दिया है। जालौर जिले के आहोर गांव की विधवा लीला को पति की मौत के बाद अपना जीवन किसी पहाड़ से कम नहीं लग रहा था। उसपर दो जवान बेटियों की शादी और दो बेटों के पढ़ाई-लिखाई की जिम्मेदारी थी। संगठन से जुड़ने के बाद लीला को इस बात की जानकारी मिली कि सरकार गरीब विधवा महिलाओं की लड़कियों की शादी के लिए पांच हजार रूपए का अनुदान देती है। संगठन के कार्यकर्ताओं ने रूपए दिलाने में उसकी बहुत मदद की। लीला कहती है कि यदि एकल नारी शक्ति संगठन ने उसकी मदद न की होती तो वह समय पर अपनी बेटियों की शादी न कर पाती।

भारतीय समाज में विधवा और परित्यक्ता महिलाओं का कोई वजूद नहीं माना जाता है। पति की मौत होते ही विधवाएं समाज से अलग-थलग कर दी जाती है और आम महिलाओं की तरह उन्हें कोई अधिकार नहीं दिए जाते। दूसरी महिलाओं की तरह बिंदी न लगाने, चूड़ियां न पहनने, रंगीन

कपड़े न पहनने और शुभ कार्यो में शामिल न होने जैसे प्रतिबंध लगाकर विधवाओं को समाज की मुख्यधारा से काटने का काम सदियों से चला आ रहा है।

उत्तर भारत में तो विधवा महिलाओं की हालत काफी दयनीय है। राजस्थान भी इन कुरितियों से अछूता नहीं है। यहां की कई जातियों में महिलाओं को पति की मौत के बाद कई महीनों और कभी-कभी सालों तक एक कमरे में बंद करके रखा जाता है। उनके अच्छा और रंगीन पहनने के अलावा अच्छा खाने और किसी शुभ कार्यो में उनके शामिल होने पर भी प्रतिबंध होता है। लोग विधवाओं का चेहरा सुबह-सुबह देखने को बहुत बुरा मानते हैं। इस तरह विधवा महिलाओं का जीवन नारकीय बनाने में समाज कोई कसर नहीं छोड़ता है।

अगर हम भारत में विधवा महिलाओं की सही स्थिति का जायजा लें तो हालात काफी बदतर नजर आते हैं। देश में विधवाओं की संख्या चार करोड़ से ज्यादा है और सूनेपन और अकेलापन ही इनकी जींदगी है। हार्वड विश्वविद्यालय की अध्ययनकर्ता मार्टीचैन ने भारतीय विधवा महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति का गहराई से अध्ययन किया। उनके मुताबिक विधवाएं समाज से अलग-थलग होकर बामुश्किल अपनी जींदगी काट रही हैं। उनकी स्थिति में सुधार लाने के लिए समाज और सरकार कोई ठोस प्रयास नहीं कर रही है।

मार्टीचेन ने अपने अध्ययन के लिए भारत के सात राज्यों-पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, केरल, तमिलनाडू और आंध्राप्रदेश का सर्वे किया। सर्वे में जो बात सामने आई उसके मुताबिक ज्यादातर विधवाएं गरीब और ग्रामीण इलाकों की है। जिनमें पचास फीसदी महिलाएं पचास से कम उम्र की थीं। नब्बे फीसदी महिलाओं ने पति की मौत के बाद दूसरी शादी नहीं की। सर्वे के मुताबिक देश में ऐसी महिलाओं की भी कोई कमी नहीं जिसने बहुत ही कम उम्र में अपना पति खो दिया हो।

अपने सर्वे से भारतीय विधवा महिलाओं की बदतर हालत के जानने के बाद मार्टीचेन ने उदयपुर में काम कर रही संस्था आस्था से संपर्क किया और विधवा महिलाओं की स्थिति के लिए काम करने की बात की। उनके तथ्यों को समझने के बाद आस्था ने इस काम की जिम्मेदारी ले ली। और यहीं से राजस्थान के विधवा महिलाओं के जीवन में बदलाव आने की कहानी शुरू हुई। सबसे पहले देश के छह राज्यों में विधवा महिलाओं की स्थिति में बदलाव की योजना बनाई गई। राजस्थान में आस्था ने कोटा के हाड़ौती हस्त शिल्प संस्थान को इस कार्य में अपना सहभागी बनाया।

काम की शुरूआत पेंशन के अधिकार से हुई। लेकिन अब पेंशन के साथ-साथ संपत्ति के अधिकार, सरकार के साथ नीति परिवर्तन और अकाल राहत कार्यो के लिए भी कार्य किया जा रहा है। इसके अलावा सभी एकल नारियों को संगठन से जोड़ने, उन्हें सरकारी योजनाओं, कानून और नीतियों का लाभ दिलवाने, संगठनिक सदस्यों के जातीय और सामुदायिक रीति-रिवाज बदलने, आय-संवर्धन योजनाओं को सामूहिक प्रयास से लागू करवाने और महिला स्वास्थय और उससे जुड़े कानून को प्रोत्साहित करने जैसे कार्य भी किए जा रहे हैं। जाहिर है यह संगठन अकेली रहने वाली महिलाओं के कल्याण और आर्थिक सहयोग देने के अलावा उनके सशक्तिकरण के लिए भी सक्रिय है। अब

तो ये महिलाएं एक ओर जहां अपने अधिकारों को समझने लगी है वहीं सामाजिक मुद्दों मसलन पानी, रोजगार, शिक्षा और कुरितियों पर भी आवाज उठाने लगी है।

एकल महिलाओं की ताकत ने महज कागजी ही नहीं बल्कि व्यवहार में राज्य सरकार के नियमें में कई बदलाव करवाए हैं। एकल महिलाओं के प्रस्तावों को ग्रामसभा में प्राथमिकता, इन महिलाओं के बेटों की स्नातक तक मुफ्त शिक्षा (लड़कियों की शिक्षा पहले से मुफ्त है) और विधवा पेंशन 125 रूपए से बढ़ाकर 200 करने जैसे कई बदलाव एकल महिलाओं के सफलता की कहानी खुद कहती है। सरकारी नियमों में यह बदलाव किसी एक संगठन के प्रयास का नतीजा नहीं है। दरअसल एकल नारी शक्ति संगठन के बैनर तले राज्य के 23 जिलों की एकल महिलाओं ने गांव से राज्य स्तर तक काम का बीड़ा उठाया और राज्य सरकार पर लगातार दवाब बनाया। सफलता और एकल महिलाओं की ताकत की बदौलत ही राजस्थान सरकार के सहायता विभाग को यह घोषणा करनी पड़ी कि राहत कार्य संवत् 2059 के तहत एकल महिलाओं को प्राथमिकता दी जाए। एकल नारी शक्ति संगठन की महिलाएं इसे अब तक की अपनी सबसे बड़ी जीत मानती हैं। (चरखा)

कृपया भुगतान चरखा के नाम करें।
चरखा, एफ ब्लॉक, 9/11
मालवीय नगर, नई दिल्ली 1100617
फोन 011 26680688,26680816

चरखा स्टॉफ

शंकर घोष

अध्यक्ष व मुख्य कार्यकारी

संपादकीय विभाग

अमन नम्र, स्थानीय संपादक,

सुजाता राघवन, सहायक संपादक, अंग्रेजी

प्रतिभा ज्योति, सहायक संपादक, हिंदी

कार्यक्रम

सुनीता रॉय, कार्यक्रम प्रबंधक,

इंद्राणी डे, सह संपादक, अंग्रेजी

प्रबंधन

संजय मिश्रा, कार्यालय प्रबंधक,

एकाउंट

मंजू जेम्स, एकाउंटेंट,

चरखा सहयोगी

विजी बालाकृष्णन: पत्रकारिता से जुड़ाव, शांध एवं दस्तावेजीकरण में विशेष रुचि, चरखा के विभिन्न कार्यक्रमों में सलाहकार के रूप में विशेष सहयोग

अतनु रॉय: देश के जानेमाने रेखांकन कलाकार तथा दृश्य मीडिया के रचनात्मक सलाहकार।

आनिन्दियो रॉय: विकास के मुद्दों पर फिल्में बनाने से जुड़ाव, दृश्य-श्रव्य मीडिया के सलाहकार।

स्वराज चौहान: सामाजिक मुद्दों से विशेष जुड़ाव रखने वाले वरिष्ठ पत्रकार। हिंदुस्तान टाइम्स व स्टेट्समैन सरीखे अखबारों से लंबे समय तक जुड़े रहे। फिलहाल स्वतंत्र पत्रकारिता तथा चरखा के साथ जुड़ाव।